महाराजा मर्दन सिंह एक इतिहास पुरुष के रूप में (एक-अध्ययन)

* अतुल गुप्ता

महाभारत कालीन नगर जो अतीत में राज्य, तहसील, परगना के रुप में ज्ञात ग्राम बानपुर का नाम यहाँ के राजा मर्दन सिंह के कारण सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वर्तमान चन्देरी, तालबेहट, ललितपुर, मेहरोनी आदि स्थान इसी राज्य के अन्तर्गत आते थे सन् 1857 के स्वाातंत्रय समर के अमर योद्धा महाराजा मर्दन सिंह यहीं के राजा थे।

बानपुर के राजा मर्दन सिंह ओरछा के महाराजा मधुकर शाह (सन् 1554-1592 ई.) के ज्येष्ठ पुत्र का नाम शाह के वंशज थे। राम शाह जो 1592 ई. में ओरछा के राजा बने थे उन्हें मुगल सम्राट जहाँगीर ने गद्दी से हटाकर तीन लाख रुपया वार्षिक आय की बार, मथरा की जागीर दी थी। राम शाह की 1612 ई. में ही मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके मृत ज्येष्ठ पुत्र संग्राम सिंह के ज्येष्ठ पुत्र भरत सिंह बार के जागीरदार बने। भरत सिंह प्रशासनिक कार्यों में दक्ष पराक्रमी एवं महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने सन् 1616 ई. में चंदेरी के सूबेदार गोदाराम पर चढ़ाई कर उसे पराजित किया। सन् 1617 ई. में चन्देरी को अपनी राजधानी बनाया तथा चन्देरी राज्य को चार प्रशासनिक इकाईयों में क्रमशः दुदाही संभाग, हर्षपुर संभाग गोल कोट संभाग व भानगढ़ संभाग विभाजित कर सुव्यवस्थित शासन स्थापित किया। भरत सिंह के 6 छोटे भाई थे। जिन्हें क्रमशः कृष्ण सिंह को बाँसी, रुप सिंह को विजराठा, कीर्ति सिंह को ककराना, ध्रुव सिंह को खडेसरा, चंद्रभान को जामुना, धाना एवं मानसिंह को डाँग बरौदा की जागीर दे दी थी। सन् 1630 में भरत सिंह भी मृत्यु के पश्चात् क्रमशः देवी सिंह (1630-63), दुर्ग सिंह (1663-87), दुर्जन सिंह (1687-1736), मान सिंह (1736-50), शासक रहे थे। मान सिंह ने अपने तीसरे पुत्र धीरज सिंह को बानपुर की जागीर दे दी थी।

मान सिंह की मृत्यु के पश्चात् अनुरुद्ध सिंह (1750-75) तथा राम चन्द्र (1775-1802) चन्देरी केलगुवाँ में राजा रहे थे। चन्देरी के राजा राम चन्द्र ने चार पुत्र प्रजापाल, मोहप्रहलाद, भुवन सिंह तथा चित्र सिंह थे। सन् 1801 ई. में राजा रामचन्द्र अपने ज्येष्ठ पुत्र प्रजापाल को राज्य सौपकर अयोध्या चले गये। रजवारा के तत्कालीन रावसाहब उमराव सिंह ने एक निकट के रिश्तेदार नत्थूराजा पिपरासर वालों को कूटनीति से चन्देरी का शासक घोषित कर दिया। उस पर अयोध्या में वास कर रहे राजा राम चन्द्र ने अपने पास आये पुत्रों से रजवारा की गढ़ी तुडवाकर असकी पांच ईटे नजर करने के लिए कहा। प्रजापाल इसी रजवारा युद्ध में 1802 में मृत्यु को प्राप्त हुए।[2] तत्पश्चात् 1802 ई. में राज्य का भार राजा रामचन्द्र के मझले पुत्र मोद प्रहलाद पर आ गया और विभाजन में भुवनपाल ग्राम भैलोनी तथा चित्र सिंह मथरा (बार) की जागीर प्राप्त कर राज काज करते रहे। मर्दन सिंह का जन्म 19/10/1802 ई. आश्वित शुक्ल शरद पूर्णिमा संवत् 1859 को चन्देरी में हुआ था मर्दन सिंह का जन्मोत्सव तलवेहट के किले में सम्पन्न कराया गया। मोदप्रहलाद विलासी प्रकृति थे। इनका विवाह ग्राम खुट गुवाँ के परमार पर्वत सिंह की पुत्री राजकुँवर से हुआ था। महाराजा मर्दन सिंह इन्हीं की सन्तान थें। मोद प्रहलाद ने राजकुँवर के अतिरिक्त सात और विवाह कियो। इतना ही नहीं इनक हरम में 23 वेश्याएँ भी सदैव रहा करती थी।

यह दौर अराजकता, अवनति और विलसिता का था। इस समय चन्देरी राज्य सागर के मराठा मालमतदार रघुनाथ राव एवं ग्वालियर के सिंधिया (दौलतराव) की वैमनस्यता के कारण युद्ध की चपेट में आ गया और रघुनाथ राव के प्रभाव को कम करने के लिए सिन्धिया ने सन् 1810 में अपने फ्राँसीसी सहायक जान वैष्टि की सहायता से चन्देरी राज्य का अधिकार कर लिया। प्रहलाद ने घवराकर श्यामजी चौपरा की हवेली झांसी में शिवराम भाऊ के संरक्षण में शरण ली। मिन्नत करने पर सिंधिया से 2500 वार्षिक पेंशन एवं चन्देरी राज्य के दो परगना दूधई और खजूरिया मोद प्रहलाद को वापस मिल गंए तथा राजा तालब्रेट के किले में निवास करने लगा। लेकिन विलासित और प्रशासनिक अवयवस्था के कारण प्रजा में असंतोष बढ़ गया। परिणाम स्वरूप 1811 ई. में तालबेहट के किले सहित चन्देरी राज्य के सभी छः सौ साढ़े पंचानवे गांवो से पुनः हाथ धोना पड़ा। मोद प्रहलाद ने अपनी ससुराल ग्राम कैलगुवाँ को राजधानी बना कर वहीं गढ़ी का निर्माण कराया मात्र 30 गाँवों की माल गुजारी पर सन् 1815 से 1830 तक आर्श्रित रहना पड़ा।[3] केलगवाँ में रहते हुये उन्होंने सिन्धिया के बलात आक्रमण की शिकायत बुन्देल खण्ड मे कम्पनी सरकार के राजनैतिक प्रतिनिधि के पास हमीर पुर की थी।

जिसके निराकरण के लिए मीर मुंशी बाँदा, जॉन वैप्टिस्ट और मोद प्रहलाद की संयुक्त बैठक ग्राम सुनवाही में हुई थी। जिसमें निर्णय दिया गया कि सम्राट जहाँगीर ने जो क्षेत्र राजाराम शाह को ओरछा राज्य से दिलवाया था वह (बार, बानपुर व तालवेहट) मोद प्रहलाद के कब्जे में रहेंगे। इस समझौते पर मोद प्रहलाद के कामदार पं. दुलारे मिसर मिसौरा वालो ने तथा सिंधिया की तरफ से वासदेव राव भाऊ ने हस्ताक्षर किये थे। इसके बाद मोदप्रहलाद ने अपने वंशज धीरज सिंह के वंशजों से वानपुर लेकर कैलगुवाँ के बजाय बानपुर में राजधानी स्थापित कर ली थी। इस प्रकार 1830 ई. में बानपुर राज्य का आविर्भाव हो गया था जो मात्र 16531 रुपया वार्षिक आय का रह गया था[4] भी अपने पिता की भाँति महात्वाकांक्षी थे। लेकिन पारिवाहिक कलह एवं तत्कालीन प्रशासनिक अव्यवस्था से दुःखी थे। वे अपना खोया हुआ राज्य (चन्देरी) पाना चाहते थे। इस समय सारा देश भय और असंतोष के दौर से गुजर रहा था। दिल्ली की गद्धदी पर कहने मात्र से मुगल वंशी अकवर द्वितीय का राज्य था। खल्फ खुदा का, मुल्क बाद शाह का पर हुक्म कम्पनी सरकार काद्ध सभी को मानना पड़ता था। इस समय क्या राजा, क्या रंग सभी अंग्रेजों के इशारे पर नाचते थें। अंग्रेजी फोजो के गेवध जैसे कार्यों व पिढ़ारियों द्वारा असमय लुट, मराठी सेना तथा जगीदारों की गयी लूटो से जनता धृणित एवं दुःखी हो गई थी रही सही कसर प्राकृतिक आपदाओं ने पूरी कर दी। प्रति 4-5 वर्षों में एक बार अनावृष्टि या अतिवृष्टि होती ऐसे में यहाँ के लोगों का लुटेरा बना विवशता ही थी।

मराठों के झाँसी राज्य में रामसिंह राजपूत, युद्ध, नूरखाँ मुसलमान, मनीराम, बदलू लोधी, बुदई फिरंगिया, छोटू ब्राह्मण, हीर अहीर, मंगे नाई, अमीर का पिण्डारी आदि डाकुओं के गिरोह का बोलबाला था,

* अतिथि व्याख्याता, इतिहास, शासकीय माधव महाविद्यालय, चन्देरी

जो समूचे बुन्देल खण्ड में तहलका मचाये हुए थे। मर्दन सिंह के दोनों भाई कुसंगति में पड़कर वागी वन गए।

मर्दन सिंह को घर में एक मात्र सहारा अपनी परम विदुषी धर्म पत्नी रत्नेश का ही था। रानी रत्नेश ग्राम सुनवाहा के धीरज सिंह धंधेरे की पौत्री और विशुन सिंह की बेटी थी। मर्दन सिंह ने जॉन बेटिप्स्ट सेजिसे चन्देरी विजय के उपलक्ष्य में ग्राम जरया[6] की जागीर प्राप्त हुई थी से मेल जोर बढ़ाकर अपनी सेना को पाश्चात्य ढ़ग से प्रशिक्षित कराते रहे।

अवतक मर्दन सिंह के तीन पुत्र महीपत सिंह, शेरसिंह और गिरवर सिंह हो चुके थे। मर्दन सिंह अपना अधिकांश समय अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत करने हेतु गाँव–गाँव में भ्रमण करते हुए बिताते थे। एक औ मराठो द्वारा की जा रही लूटपाट और दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा निर्दोष प्रजा पर किए जा रहे असहनीय अत्याचार से। तालबेहट में अपने राजवंश के प्रति घृणास्पद जन श्रुतियों के कारण उनका मन व्याकुल हो गया वह तालवहेट की जगह बानपुर में अपना अधिकाश समय व्यतीत करने लगे। मर्दन सिंह ने खंगार,नट, ठाकुर, लोधी, घोषी, यादव आदि जातियों के अपने दु:साहसी साथियों को गुरिल्ला पद्धति से युद्ध लड़ने हेतु तैयार किया[7] मर्दन सिंह ने अपने दोनों भाइयों का समझाबुझाकर बार की गढ़ी की सुरक्षा से नियुक्त किया। मोद प्रहलाद की अस्वस्था को चलते वानपुर में 12 वर्ष राज्य संचालन के बाद 1842 ई. में निधन हो गया मोद प्रहलाद के निधनोपरान्त वानपुर में मात्र रजवारा के राव साहव और चौधरी खेत सिंह फौजदार को छोड़कर आए सभी जागीरदारों के बीच मर्दन सिंह का 1842 में राज्याभिषेक हुआ।[8] इसी दौरान वानपुर राज्य की सीमा से लगे हुए शाहगढ़ राज्य सिंहासन पर मर्दन सिंह के वंश गोत्रज राजा वखतबली आसीन हुए। मर्दन सिंह की ममेरी बहिन बखतवली को ब्याही थी। पितृ पक्ष की ओर से इनके काका–भतीजे का रिश्ता बैठता था। अंग्रेजो की कुटनीति से दोनों ही राजा त्रस्त थे। जिससे इनकी मित्रता और भी मजबूत होती गई। महरौनी में उस समय रंधीर धोषी ओर बमराना के पं. केशरी सिंह टौटे जैसे बहादुर साथियों ने इन्हें पूर्ण रूप से साथ निभाते का बचन पहले ही दे रखा था। महाराजा मर्दन सिंह ने अपने इन साथियों के साथ खिमलासा को लूटा तथा लूट में प्राप्त सवा मन सोना व सवा मन चाँदी से अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत किया।

सन् 1844 में महाराजा मर्दन सिंह तालवेहट पहुँचे तालवेहट की स्थिति भी पहले से सामान्य हो गयी थी। अत: यहाँ के गणमान्य नागरिकों द्वारा राज्याभिषेक किया गया। यहीं से मर्दन सिंह झासी के गणेश मन्दिर में हो रहे भोरोपंत की पुत्री मनु का राजा गंगाधर राव के साथ हो रहे विवाह में सम्मिलित हुए। मर्दन सिंह को प्रजा का भरपूर सहयोग मिलने लगा। 21/11/1853 को झांसी नरेश गंगाधर राव की मृत्यु होने पर मर्दन सिंह झाँसी पहुँचे। उन्होंने वहाँ रानी को सांत्वना दी और अंग्रेजो की कुचलों को समझाते हुए रानी से गहन मंत्रणा की।[9] इसी बीच मर्दन सिंह का अनेक स्वतंत्रय समर भीरो विद्रोहियें तथा स्वराज प्रेमियों से सम्पर्क होता रहा।

मार्च सन् 1854 में लार्ड डलहौजी के आदेशानुसार रानी को बाहर निकालकर अंग्रेजी हुकुमत का झण्डा यूनियन जैक झांसी के किले पर फहरा दिया। गया सम्पूर्ण देश अंग्रेजो के अत्याचार से व्याकुल था। इस कारण विद्रोह की स्थिति बनी और झांसी में इसके लिए 31 मई 1857 रविबार का दिन तय हुआ। इस स्थिति के सन्दर्भ में कैलाश भडवैया जी ने वानुपर विविध में लिख है कि–

दो मौते के कोऊ की होती, माता न जन्म दूजो देहे।
अव प्रण जाय के परदेसी, कोई एक हिन्द पैरे पइहे॥
रैम्यत बोली रानी की जै, रानी बोली मर्दन की जै।
जै वीर हिन्दी के ज्वानन की, बुन्देले मर्दन सिंह की जै॥

महाराजा मर्दन सिंह अपने अलवेला नामक धोड़े पर वैठ कर निर्धारित गुप्त योजना के अनुसार झांसी पहुँच गए। वहाँ उन्होंने रानी से विचार विमर्श किया और किले के हवलदार गुरुवख्य सिंह की सहायता से अंग्रेजो को भागरक 08/06/1857 को किले से यूनियन जैक उतार फेंका। उधर दिनांकन 12/06/1857 के सूवेदार दिमान अर्जुन बनैरमा के नेतृत्व में ललित पुर में भी बगाबत हो गई।[11] भरोसा में 13 जून को मर्दन सिंह की मुठभेड़ अंग्रेजो के साथ हुई। जिसमें अंग्रेज वहाँ से भागने को विवश हो गये। मर्दन सिंह की कूटनीतियों का फिरंगियों को पता नहीं चल पाता।

का कइये बानपुर बारे की
मर्दन सिंह नृपत जुझारे की.........
जहँ तोप चले गोला चले भालन कि है मार

जहँ सीस हथेली ले चले जयराजा के सिरदार का कइये बानपुर बारे की॥[12]

मर्दन सिंह से युद्ध में हार कर पलामन करते हुए भागे जा रहे लेफिटनेंट अर्विन को युवराज महीपत सिंह ने कल्यानपुरा में शरण दे दी। युवराज उस यम अपनी पत्नि कमल कुवर के साथ कल्याण पुरा में रह रहे थे।

मर्दन सिंह की नीति वस्तुत: अंग्रेजों के पेट में घुसकर विस्फोट करने की थी। वे जहाँ एक ओर अंग्रेजों असहाय बच्चों तथा अवलाओं को शरण देकरअपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते थे, तो दूसरी ओर अपनी सैन्य शक्ति को धीरे–धीरे बढ़ाकर अंग्रेजों को उनकी राह तक पहुँचा देना चाहते थे। इसी दौरान मर्दन सिंह ने अपने 500 ब्रिदोहियों का दल बनालिया था। उन्होने खुरई खिमलासा को वहाँ के तत्कालीन तहसीलदार अहमदबख्श के सहयोग से जीतकर राव पदमसिंह पाटन को सौप दिया था। इस से नाराज होकर अंग्रेजो ने 10 जुलाई शुक्रवार को मर्दन सिंह से चन्देरी व ललितपुर धीन लेने का आदेश दे दिया। इस अप्रत्यार्शित घटना से वे दु:खी हुए। घूमते धुमाते रणबांकुरे बुदेल वीर ने 17 सितम्बर को सागर पर आक्रमण कर गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करते हुए अंग्रेजो की आँख में धूल झोंक दी। अनगना की घाटी पर कई दिनों तक युद्ध चलता रहा, जिसमें मर्दन सिंह के साथी शाहगढ़ नरेश बखतबली को पराजित होना पड़ा।

सर ह्यूरोज इंदौर से चलकर बढ़ता हुआ चला आ रहा था। उसने सागर से बरोदिया गढ़ी को तोड़, माल थाने होते हुए मदन पुर आए वहाँ उसने किलेदार जगदेव के सहयोग से 8 मार्च को खण्डेराव अंबानी मड़ावरा की गढ़ी तोड़ दी, तत्पश्चात् ह्यूरोज ने 9 मार्च को कुम्हैडी, 10 मार्च को महरौनी तथा 11 मार्च 1858 को बानपुर आकर नत्थेखां के लड़के काले खाँ से तोप चलवाकर यहाँ के किले को धवस्त करा दिया।[13]

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने मर्दन सिंह को एक पत्र युद्ध में सहायता करने के लिए लिखा जो अब भी मर्दन सिंह के वंशजो के पा सुरक्षित है। इस पात्र में रानी ने अपनी सहायता के लिए लिखा था कि स्वराज्य स्थापना के लिए उन जैसे वीरों की आवश्यकता प्रत्येक स्थान पर है। इस पत्र में स्वराज शब्द आया है।

ह्यूरोज ने 12 मार्च को बिनोरी, 13 मार्च को जमालपुर तथा 14

मार्च को तालवेहट का किला मिटा दिया। इसी बीच 13 मार्च को दुभाग्य से विद्रोही क्रांतिकारियों को रसद देकर अपनी राष्ट्रभक्ति को सर्वो परि मानने वाले पं. दुलारे मिश्र मसौरा वालों का देहान्त हो गया। जिसका मर्दन सिंह व बखतवली को अत्यन्त दुःख हुआ। 18 मार्च 1858 को मर्दन सिंह बंदेसरा से बेतवा पार करने के बिचार से झरर घाटी की ओर चले। उनकें साथ गजरात सिंहओर जोरावर सिंह थे। तीनों व्यक्ति घोड़ों पर सवार थे। ह्यरोज ने, अपनी सेना का एक दल मेजर ओर की अध्यक्षता में अलग से लगा दिया था जिससे में लोग बेतवा पार न हो सकें।[14]

मर्दन सिंह और बखतवली तात्याटोपे की सहायता के लिए जंगल के रास्ते चरखारी जा पहुँचे जहाँ से अंग्रेज मित्र राजा रतन सिंह को लोग पराजित कर कालपी जा पहुँचे। 21 मार्च 1858 को जब ह्यरोज की सेना ने झाँसी के किले को घेर लिया। रानी लक्ष्मीबाई ने तात्याटोपे को भी पेशावा की सेना लेकर झाँसी पहुँचाने के लिए लिखा। 1 अप्रैल को झाँसी पहुँचकर विशाल सेना के साथ मर्दन सिंह ने ह्यरोज की सेना पर आक्रमण कर दिया।[15] लेकिन ह्यरोज की सुगठित मोचांबन्दी के कारण उसकी गोलियों से विद्रोही सैना को भागना पड़ा। 3 अप्रैल 1858 को झाँसी का किला पुनः लक्ष्मी बाई के अधिकार में करवाने में मर्दन सिंह को अफलता मिली, किन्तु अंग्रेजों से युद्ध करते-करते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु के समाचार को सुनकर मर्दन सिंह की छाती पर मानों पत्थर पड़ गया। वे बखतवली के साथ मोरार के जंगलों में 28/09/1858 को चले जा रहे थे। अब इस रणाबांकुरे के पास आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई चारा न रह गया था। यहाँ पकड़े जाने पर दोनों मित्रों को लाहौर जले में भेज दिया गया। A "IN 1842 Mardan Singh succeded him. He took active part in the freedom struggle of 1857 and in consequence was deprived of his kingdom and imprisoned at Lahore. His fine fort cum palace built on an eminence is now in a runined state as it was practically destroyed by the British in 1857."[16]

लाहौर से मर्दन सिंह के अनुरोध पर फिर मथुरा जेल में भेज दिए गए। मर्दन सिंह का अनुरोध था कि हमारी मातृभूमि में ही हमें रखा जाए। 29 दिसम्बर 1872 को शाहगढ़ नरेश महाप्रयाण कर गए। 22/07/1879 मंगलवार को भगवान कृष्ण के पावालीला धाम वृंदावन में यह रणवाँकुरा देश भक्त मृत्यु को प्राप्त को गया।[17] प्रथम स्वतंत्रता संग्राम संनानियों के संदर्भ में जब जब झाँसी की रानी और उनके सहयोगियो का जिक होगा तब तब बानपुर के राजा मर्दन सिंह का स्मरण अवश्य किया जाएगा। मर्दन सिंह पर बानपुर को सदैव गर्व रहेगा। मर्दन सिंह के सन्दर्भ में गेंदा लाल सिघंई ने अपने पुस्तक चन्देरीकाव्य में लिखा-

पर कीचड़ में पुष्प कमल का सदा खिला करता है।
जैसा दुःख में ही ईश्वर का ध्यान मिला करते है॥
ऐसे ही राजा ने भी, युवराज तपस्वी पाया।
मर्दन सिंह कि जिसने, आजादी का विगुल बजाया॥
निज शासन को सुदृढ़ बनाने सदा सोचते रहते।
जो स्वदेश की उन्नति, हित, योजनायें, गढ़ते रहते॥
जिनने अपने जीवन में संघर्षों को अपनाया।
बार-बार देहरी जाकर रानी का राज बचाया॥
जाति बन्धुओं को जिनने गौरव का मंत्र सिखाया।
फिर अंग्रेजों के खिलाफ जिनने हथियार उठाया॥[18]

1857 के स्वतंत्रय समर वीर महाराज मर्दन सिंह की कीर्ति सुरभि लोकमानस में युगों-युगों तक जीवित रहकर वर्तमान युवा पीढ़ी को देश भक्ति के लिए प्रेरित करती रहेगी।

उनकी यश का हिन्दी साहित्यकार डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत ने इस फाग के माध्य से वर्णन किया है-

धन-धन भूप बानपूर वारौ, जिनने लर कै मौरा मारो।
सैन फिरंगिन की सागर से चल बरोदिया आयी।
उनकी करी कठिन भी रन में खडगन से पोनाई।
गिनती के लै ज्वान संग में बाज झपटटा मारौ।
फौज फिरंगी पीछे छोड़ी तक सागर कौ द्वारौ।
धन-धन भूप बानपुर बारौ, जिनने लर कै मौरा मारा।[19]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तवारीखे चन्देरी
2. डॉ. बावूलाल द्विवेदी बानपुर विविधा-स्वतंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृष्ठ क्रमांक 93
3. वही पृष्ठ 94
4. डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी बानपुर विविधा राजा मर्दन सिंह और चन्देरी का मुददा पृ. 94
5. पं. बाबूलाल द्विवेदी अप्रकाशित पुस्तक बानपुर का 1857 का स्वतंत्रता संग्राम।
6. पं. बाबूलाल द्विवेदी बानपुर विविधा-स्वातंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृष्ठ क्र. 94
7. पं. बाबूलाल द्विवेदी बानपुर विविध स्वातंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृ. क्र. 95
8. पं. बाबूलाल द्विवेदी-(बानपुर विविधा) स्वातंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृष्ठ क्र. 96
9. वही पृष्ठ क्र. 96
10. कैलाश मडवैया बानपुर विविधा पृ. क्र. 133
11. ललितपुर गजेटियर
12. दबे अनिल माधव रोटी और कमल की कहानी 1857 की क्रांतिकारी यात्रा पृष्ठ क्र. 213
13. पं. विष्णु भटट शास्त्री ने मराठी भाषा में माझा प्रवास (आँखो देखा गदर अनुवादक अम्रतलाल नागर)
14. पं. बावूलाल द्विवेदी स्वतंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृ.क्र. 97
15. मर्दन सिंह की आक्रामकता और स्वदेश प्रेम को देखकर कर्नल सी.पी. मेलेसन सी. एस. आई. को लिखना पड़ा। (The Rajah of Banpur and others of lesser not boldly assertes theirindependence.) (बानपुर विविधा पृ. क्र. 66 से उद्धत)
16. झाँसी जिला गजेरियार पृ. 328
17. पं. बाबूलाल द्विवेदी-स्वतंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृ.क्र. 97.
18. गेदां लाल सिघई (एडवोकेटे) चन्देरी काव्य (प्राकृतिक सौन्दर्य प्राचीन और नवीन स्थितियाँ पृ.क्र.18)
19. पं. बाबूलाल द्विवेदी-स्वतंत्रय समर के अमर योद्धा बानपुर नरेश मर्दन सिंह पृ.क्र. 98